(अमीरन उर्फ़ उमराव की मँगनी के दृश्य, उसे गहनों से सजाया जा रहा है।)

गाना

काहे को ब्याहे बिदेस अरे लखिया बाबुल मेरे!
हम तो बाबुल तोरे बेले की कलियाँ।
रे घर-घर माँगी जाएँ। अरे लखिया बाबुल मोरे...
हम तो बाबुल तोरे पिंजरे की चिड़िया।
कुहुक-कुहुक रह जाएँ। अरे लखिया बाबुल मोरे...

फ़ैज़ाबाद सन् १८४०

(दारोग़ा, दिलावर और गाड़ीवान बख़्श कबूतरबाज़ी कर रहे हैं।)

दिलावरः दारोग़ा के बच्चे!

दारोग़ाः जाओ मेरे शेरो! हुश! शाबाश!

(दिलावर एक उड़ते कबूतर को पकड़ता है।)

दारोग़ाः मेरा शीराज़ी[3]।

दिलावरः किसका शीराज़ी? टुकड़ी तो हम तोड़ कर लाए हैं। सरकार में दावा करो तो भी न मिले।

दारोग़ाः मैं पैसे देने को तैयार हूँ।

दिलावरः आठ आने दो।

दारोग़ाः आठ आने में तो छै कबूतर मिलते हैं।

गाड़ीवान बख़्शः हम्म्म। तो ले आओ जाकर चार आने में तीन कबूतर।

दिलावरः अरे, चार आने में क्या, चार रुपये में कहो। झूठी गवाहियाँ देकर बहुत माल जमा किया है आपने। याद है?

दारोग़ाः हमने कोई झूठी गवाही नहीं दी।

दिलावरः बड़ा आया कबूतर लेने। हम्म्म।

****

(दारोग़ा अपने परिवार के साथ रसोईघर में बैठा है। अमीरन सब्ज़ियाँ काट रही है।)

अमीरन की माँः उसने कबूतर पाले ही इसीलिए हैं कि वह तुमको तंग करे। मुआ! छँटा हुआ है। जाने कौन सी घड़ी थी जो तुमने उसके ख़िलाफ़ गवाही दी थी। बारह साल की सज़ा काट कर आया है। इतनी आसानी से पिंड थोड़े ही छोड़ेगा। तुमने आख़िर उसके ख़िलाफ़ गवाही दी क्यों थी?

दारोग़ाः रानी वाले साहब ने क़ुरान पाक़ पर हाथ रखा कर पूछा कि "दारोग़ा, यह दिलावर कैसा आदमी है?" मैंने कह दिया...।

****

(दारोग़ा घोड़े पर बैठ कर काम के लिए जा रहा है। अमीरन दौड़ी आती है और उसके पीछे उसकी माँ अमीरन के भाई को गोद में पकड़े हुए आती हैं।)

अमीरनः अब्बा, आज शाम को बहुत से अमरूद लेकर आना, नारंगियाँ भी, और अब्बा, गुड़िया भी...।

---

[3]a breed of pigeons, highly prized by pigeon-fanciers.

दारोग़ाः अच्छा बिटिया।
अमीरन की माँः निगोड़मारी। मँगनी हो गई, लेकिन गुड़ियों का शौक़ नहीं गया। चल, इधर आ।
दारोग़ाः जाओ। ख़ुदा हाफ़िज़।
अमीरन की माँः ख़ुदा हाफ़िज़।
(जाता है। बग़ल के घर से दिलावर का साथी बख़्श दारोग़ा को जाते देखता है।)
****
(अमीरन अपने भाई के साथ खेल रही है।)
अमीरनः कहो गाय।
अमीरन का भाईः "गाय"।
अमीरनः गाय का बच्चा।
अमीरन का भाईः "गाय का बच्चा"।
अमीरनः गाय खाए चारा।
अमीरन का भाईः "गाय खाए चारा"।
अमीरनः हम खाएँ गुड़।
अमीरन का भाईः "हम खाएँ गू..."।
****
(दिलावर गाड़ीवान बख़्श के साथ अमीरन और उसके भाई की ओर आता है।)
दिलावरः तुम यहीं ठहरो।
गाड़ीवान बख़्श : गाड़ी तैयार है।
अमीरन का भाईः नहीं। हम खाएँ गुड़। हम अब्बा से कहेंगे।
अमीरनः अच्छा मुँह नहीं पकड़ेंगे। हम खाएँ...
भाईः गुड़। *(दोनों हँसते हैं।)*
दिलावरः *(भाई से)* ओ छोटे मियाँ! कैसे हो? *(अमीरन से)* आपने चुपचाप मँगनी कर ली, हमें बुलाया नहीं? अपने दिलावर चचा को याद नहीं रखा? अरे हाँ, आपके अब्बा पैसे दे गये हैं। आओ, कबूतर ले लो। हैं? आओ! आओ, आओ बेटा, डरो मत! आओ।
अमीरनः *(भाई से)* ठहरो हाँ!
दिलावरः शाबाश!
अमीरनः तुम यहाँ रुको। हम अभी आते हैं।
दिलावरः आओ, आओ बेटा, कबूतर ले लो। आओ! चलो।
(वह अमीरन को बैलगाड़ी में धकेल देता है। अमीरन का भाई देखता रहता है। अमीरन चिल्लाती है। उसके बाद गाड़ी में अमीरन को मुँह बाँधकर लिटाया हुआ है। कहीं दूर जाकर गाड़ी नदी के किनारे रुक जाती है।)
दिलावरः ए बख़्श! गाड़ी रोको!
गाड़ीवानः अच्छी बात है।
(गाड़ी नदी के किनारे खड़ी होती है। दिलावर गाड़ी से उतरकर इधर-उधर देखता है।) दिलावरः यह जगह ठीक मालूम होती है। क्यों?

गाड़ीवानः हाँ। ... इसे तो मार डालो! मगर हमारा रुपया...?
दिलावरः गले-गले पानी है।
गाड़ीवानः हम तो कुछ और ही समझे थे...!
दिलावरः अमाँ, कहीं से नहीं हो सका तो कबूतर बेच कर दे देंगे।
गाड़ीवानः हम्म्म! अमाँ, एक बात बताएँ?
दिलावरः कहो!
गाड़ीवानः लखनऊ चलकर इस छोकड़ी के पैसे खरे कर लो।
दिलावरः हम्म्म!
गाड़ीवानः ठीक है। चलो बैठो। जल्दी।
(गाड़ी चलती है।)
****

(दारोग़ा घर आता है।)
अमीरन की माँः अमीरन सुबह से ग़ायब है। वह बाहर भैया के साथ खेल रही थी। उस कमीने दिलावर ने कबूतर देने के बहाने बुलाया था। जाइए, ख़ुदा के वास्ते जाइए। मेरी बच्ची को ढूँढ कर ले आइए।
दारोग़ाः अभी जाता हूँ।
(वह उलटे पाँव घोड़े पर बैठ कर जाता है। दिलावर के घर पहुँचकर देखता है कि दरवाज़े पर ताला पड़ा है। वह अपने घर लौटता है।)
अमीरन की माँः हाय अल्लाह! मेरी बच्ची कहाँ है? अमीरन कहाँ गई?
दारोग़ाः तमाम ढूँढ डाला। कहीं नहीं मिली।
अमीरन की माँः मेरी गुड़िया! मैं कहाँ ढूँढूँ? हाय अल्लाह!!
****

(लखनऊ की कुछ इमारतें [छोटा इमामबाड़ा और फिर बड़ा इमामबाड़ा] दिखाई देती हैं। पृष्ठभूमि में "अल्लाह हो अकबर" गाया जा रहा है। गाड़ी अमीरन को लेकर लखनऊ पहुँचती है। गाड़ीवान बख़्श दिलावर को एक बड़ी इमारत में ले जाकर वहाँ किसी औरत से कुछ बात चुपचाप से कहता है। बात होने पर दिलावर अमीरन को धकेलते हुए उस औरत के सामने खड़ा करता है। सभी अंदर जाते हैं। अमीरन को एक कोठरी में धकेल दिया जाता है जहाँ रामदेई नामक एक और लड़की लेटी है। अमीरन रोते-रोते उस लेटी लड़की के पास बैठती है। कुछ देर बाद एक और औरत खाना लेकर आती है।)
औरतः लो, खाना खाओ। *(चली जाती है।)*
रामदेईः तुम नहीं खाओगी?
अमीरनः तुम्हारा नाम क्या है?
रामदेईः रामदेई। तुम्हारा?
अमीरनः अमीरन। तुम्हें भी पकड़कर लाये हैं?
रामदेईः हाँ! माँ और बापू के साथ मेले में गई थी। वहाँ से मुझे पकड़ लाए।
(दोनों एक दूसरे को पकड़कर रोने लगती हैं।)
****

(कमरे में चादर ओढ़े एक औरत बैठी है। एक दूसरी औरत, एक आदमी, दिलावर, गाड़ीवान, अमीरन और रामदेई आती हैं।)

पहली औरतः तो यही है?

दूसरी औरतः सलाम करो। *(दोनों सलाम करती हैं।)*

पहली औरतः *(रामदेई को दिखाकर)* यह वाली कितने में पटेगी?

दूसरी औरतः एक तोड़ा[1]।

पहली औरतः तोड़ा? तेरे यार ने भी देखा है कभी? हज़्ज़ार रुपये होते हैं उसमें। मालज़ादी। हमें ठहराने चली।

दूसरी औरतः अरे बुआ, तुम तो बिगड़ गईं।

पहली औरतः हाय! हाय! बिगड़ने की तो बात ही है। छत्तीसियों को महलों में पहुँचा चुकी हूँ। पाँच सौ से ऊपर बात कभी गई ही नहीं। अब...

गाड़ीवानः हाँ तो अब तुम्हीं कुछ कहो।

पहली औरतः दो सौ मिलेंगे।

दूसरी औरतः शक्ल देखो। हाथ-पाँव देखो। फिर कहो।

पहली औरतः कह दिया ना! सिर्फ़ दो सौ रुपये!

दूसरी औरतः दो सौ में दूसरी ले जाओ।

पहली औरतः *(अमीरन को देखते हुए)* सूरत तो इसकी भी बुरी नहीं । ज़रा साँवली है। काठी भी कमज़ोर है। डेढ़ सौ रुपये दे दूँगी इसके!

(गाड़ीवान बख़्श सिर हिलाता है।)

दूसरी औरतः मंज़ूर।

आदमीः बेगम साहब ने कहा था, "रंग साफ़ हो।"

पहली औरतः सुन, पहली वाली को ले जाएँगे। ये ले। दो सौ रुपये गिन ले।

दूसरी औरतः जी।

पहली औरतः चल छोकड़ी। *(रामदेई उनके साथ जाती है।)*

गाना *(पार्श्व में)*

झूला किन डाला रे! हमरे यार।
झूले मोरा सैंया, लूँ मैं बलैया रे।
हमरे यार, हमरे यार।
झूला किन डाला रे हमरे यार।
अमवा के पेड़वा पे झूला झुलत है।
गरवा लगाए पकड़ लीन्हीं बैंया रे।
डर मोहे लागे जिया मोरा लरजे।
हौले-हौले झुलना झुलाओ मोरे सैंया।
रे हमरे यार।
झूला किन डाला रे! हमरे यार।
झूला किन डाला रे! हमरे यार।
हौले हौले झुलना झुलाओ मोरे सैंया।

---

[1]a money bag worn around the waist which contains one thousand rupees

हौले हौले झुलना झुलाओ मोरे सैंया।
रे! हमरे यार।रे! हमरे यार।

****

(दिलावर और उसका साथी अमीरन को कोठे में ले जाते हैं। ख़ानम तख़्त पर बैठी हुक़्क़ा पीते हुए गाना सुन रही हैं। पास में हुसैनी और बिस्मिल्ला हैं।)

ख़ानमः आदाब। आओ।

दिलावरः आदाब। आदाब करो।

ख़ानमः यही छोकरी है?

दिलावरः जी हाँ।

ख़ानमः यहाँ आओ बेटी।

दिलावरः जाओ। जाओ।

ख़ानमः बैठो।

दिलावरः कितने मिलेंगे?

दिलावर का साथीः जो कुछ मिलेगा, आधा तुम्हारा, आधा हमारा। ठीक है?

ख़ानमः अच्छा, तो हमने जो कुछ कह दिया, वह मौजूद है। और वह दूसरी छोकरी क्या हुई?

दिलावर का साथीः जी, उसे तो एक बेगम साहब ने अपने घर के लिए ले लिया।

ख़ानमः कितने में?

दिलावरः चार सौ रुपये में।

ख़ानमः सूरत-शक्ल की अच्छी थी। इतने तो हम भी दे देते।

दिलावर का साथीः सूरत तो इसकी भी अच्छी है।

दिलावरः हम्म्म। जी हाँ। अच्छी है।

ख़ानमः हाँ आदमी का बच्चा है....

दिलावर का साथीः जो कुछ है, आपके सामने मौजूद है।

(पार्श्व में गाना - झनन झनन झन बाजे बिछवा....)

ख़ानमः हुसैनी! संदूकचा लाओ। *(हुसैनी संदूकचा लाकर ख़ानम को देती है।)* लो। *(गाना चलता रहता है।)*

दिलावर का साथीः जी शुक्रिया। आदाब।

ख़ानमः हुसैनी, ढाई सौ रुपये में यह छोकरी महँगी तो मालूम नहीं होती?

हुसैनीः महँगी? मैं तो कहती हूँ सस्ती।

ख़ानमः हम्म्म! ऐसी सस्ती भी नहीं। ख़ैर, होगा। सूरत तो भोली-भोली है। ख़ुदा जाने मुए कहाँ से पकड़ लाते हैं। ज़रा भी ख़ौफ़े-ख़ुदा नहीं। हुसैनी, हम बिलकुल बेक़सूर हैं। अज़ाब[5]-सवाल भी इन्हीं मुरदों की गरदन पर होता है। हमसे क्या? यहाँ न बिकती (तो) कहीं और बिकती।

हुसैनीः ख़ानम साहब, यहाँ अच्छी रहेगी। आपने सुना नहीं, बीवियों में लौंडियों की क्या गतें होती हैं?

---

[5]punishment.

ख़ानमः ए, ए, सुना क्यों नहीं? अभी उसी दिन का ज़िक्र है। सुना था, सुलतानजहाँ बेगम ने अपनी लौंडी को कहीं अपने मियाँ से बात करते देख लिया।
हुसैनीः हाय!
ख़ानमः सींखचियों से दाग कर मार डाला।
हुसैनीः हाय अल्लाह! क़यामत के दिन ऐसी बीवियों का तो मुँह काला होगा। बीवी, यह छोकरी आप मुझे दे दीजिए। मैं पालूँगी। माल आपका, ख़िदमत मैं करूँगी।
ख़ानमः तुम्हीं पालो।
हुसैनीः बिटिया, कहाँ से आई?
अमीरनः बंगला से।
हुसैनीः बंगला से?
ख़ानमः ए हे, क्या नन्ही हो! इतना भी नहीं जानतीं। फ़ैज़ाबाद को बंगला भी कहते हैं।
हुसैनीः अच्छा! तेरा नाम क्या है?
अमीरनः अमीरन।
बिस्मिल्लाः हमारा नाम बिस्मिल्ला है।
ख़ानमः भई, यह नाम तो हमें पसन्द नहीं है। हम तो इसे उमराव कह कर पुकारेंगे।
हुसैनीः सुना बच्ची! अब तुम उमराव के नाम पर बोलना। जब बीवी कहें "उमराव!" तुम कहना "जी"। हाँ? चलो, आओ, कुछ पेट में डालो।
बिस्मिल्लाः उमराव!
उमरावः जी।
(ख़ानम और बिस्मिल्ला हँसती हैं।)
****
(हुसैनी और उमराव एक चारपाई पर लेटी बातें कर रही हैं।)
हुसैनीः तेरे अब्बा क्या करते हैं?
उमरावः दारोग़ा हैं।
हुसैनीः कहाँ के दारोग़ा?
उमरावः बहू बेगम के मक़बरे पे (पर)।
हुसैनीः अच्छा। सो जाओ।
(कुछ देर बाद उमराव को डरावना सपना दिखाई देता है जिसमें दिलावर और गाड़ीवान उसकी ओर अट्टहास करते हुए आते हैं और तलवार से उसे मारते हैं। एक कबूतर भी दिलावर के सिर के ऊपर उड़ता है। नींद खुलने पर उमराव उठकर बाहर को भागती है। तभी हुसैनी भी उठ जाती है और देखती है कि उमराव उसकी बगल में लेटी नहीं है।)
हुसैनीः उमराव, उमराव, उमराव। अरे मक्का, देख लो उसे।
(उमराव एक खुली खिड़की से कूदने को होती है, तभी मक्का और हुसैनी उसे पकड़कर खींच लेते हैं।)

उमरावः आऽऽऽ
हुसैनीः आ जा। क्या हो गया था तुझे, हैं? न जाने क्या हो गया इसे! अच्छी-भली सो रही थी। अचानक उठ कर भाग गयी।
खानमः क्या हुआ, मालज़ादी? रोटियाँ लगी हैं। भाग रही थी? *(थप्पड़ मारती है।)* कहाँ भागेगी? भाग!
मौलवी साहबः बस कीजिए खानम साहब। बच्ची है।
खानमः बच्ची है? हरामज़ादी। हर्राफ़ा[6]।
हुसैनीः अरे जाने भी दीजिए।
मौलवी साहबः बस इतना काफ़ी है खानम साहब। अब यह ऐसा कभी नहीं करेगी।
खानमः घर से बाहर कभी कदम निकाला तो टाँगें तोड़कर रख दूँगी।
हुसैनीः नहीं जाएगी, नहीं जाएगी।
खानमः हरामज़ादी।
मौलवी साहबः चलो, चलो।
हुसैनीः क्या हुआ? दीवानी हो गई थी क्या? जा कहाँ रही थी? ऐसे रात-बिरात अकेली निकली तो कोई तुझे तलवार से दो टुकड़े करके डाल देगा।
मौलवी साहबः हाँ।
हुसैनीः चौक में बहुत बदमाश रहते हैं।
मौलवी साहबः बहुत।
हुसैनीः ऐसे कभी न जाना बिटिया। अब तो यही तेरा घर है। आँसू पोछ ले और चल। आ, चल बिटिया।
****
(कमरे में ख़ान साहब तानपूरा लिए बैठे हैं। ख़ानम पंखा झल रही हैं। साथ में और कुछ आदमी व औरतें बैठी हैं। तभी हुसैनी उमराव को वहाँ लाती है।)
हुसैनीः चलो बिटिया।
ख़ानमः आ गईं?
औरतः जी।
ख़ानमः *(उमराव से)* ख़ान साहब को तसलीम करो।
उमरावः तसलीम।
ख़ान साहबः जीती रहो।
ख़ानमः बैठो। आज से ख़ान साहब तुम्हें भी गाना सिखाएँगे। सीखोगी?
उमरावः जी।
ख़ानमः बड़े गुनी उस्ताद हैं। दिल लगा कर सीख लोगी तो सारे लखनऊ में नाम हो जाएगा। सब तुम्हारा गाना सुनने आया करेंगे। दरबार तक दरसाई होगी।
हुसैनीः ज़ेवर, पैसा और रुपया मिलेगा सो अलग।
ख़ानमः हाँ। बिस्मिल्लाह कीजिए ख़ान साहब।
ख़ान साहबः दायाँ हाथ बढ़ाओ बेटा।

---

[6]clever, sharp.

ख़ान साहबः *(उमराव के हाथ में धागा बाँधते हुए)* बिस्मिल्लाह-ए-अर-रहमान-अर-रहीम। अब हमारे साथ गाओ बेटा।

गाना

अल्लाह ऽऽऽऽ आऽऽऽ
प्रथम धर ध्यान दिनेश।
ब्रह्मा विष्णु महेश।
अब मोरी नैया पार करो तुम।
हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया।
सुगन विचार आयो मन मा।
कब पिया आए मोरे मंदिरवा
बिरज में धूम मचायो कान्हा।
कैसे कर जाऊँ अपने धाम।
दरशन दो शंकर महादेव।
महादेव तिहारी शरण बिना।
मोहे कल न पड़त घड़ी-पल-छिन-दिन।
पकरत बैंया मोरी बनमाली।
चूरियाँ तरक गयीं सारी अनारी।
बाँसुरी बाज रही धुन-मधुर कन्हैया।
खेलत जावत होरी।

(गाना गाते-गाते दृश्य बदलता है। उमराव बड़ी हो चुकी है और बिस्मिल्ला के साथ नाच रही है। गाना वही है लेकिन पात्रों की उम्र अधिक है।)

****

(उमराव मौलवी साहब के सामने बैठकर शेर सुन रही है। कबूतर गुटर-गूँ कर रहे हैं।)

मौलवी साहबः ख़बरे तयूरे-इश्क[7] सुन,
ख़बरे-तयूरे-इश्क़ सुन।
न जुनूँ[8] रहा न परी रही,
न वो (वह) मैं रहा न वो (वह) तो तू रहा।
जो रही सो बेख़बरी रही॥

हैं? अब देखो, यह बेख़बरी, यह बेख़बरी वो (वह) नहीं जो किसी बात को न जानने का नतीजा होती है। यह बेख़बरी है इश्क़ की इन्तिहा, जहाँ सब कुछ ख़त्म हो जाता है। कुछ भी नहीं रहता है। न जुनूँ रहा न परी रही। यानी, न आशिक़ न माशूक़, न इश्क़। बस, बस रह जाता है एक ऐसा आलम जिसे शायर बेख़बरी कहता है। और, और यही बेख़बरी इस शेर का हुस्न है।

उमरावः सुबहान अल्लाह। मौलवी साहब, कभी-कभी मेरा जी भी चाहता है कि मैं शेर कहने लगूँ।

---

[7]message of love that the birds bring.
[8]madness, possession by a jinn.

मौलवी साहबः हाँ, हाँ, ज़रूर कहा करो। दिल के जज़्बात[9] की इज़हार[10] करने का इससे बेहतर तरीक़ा नहीं है।
उमरावः आप, आप इसलाह[11] दिया करेंगे?
मौलवी साहबः हँ, यह, यह भी कोई पूछने की बात है?
****
(रसोई में उमराव व्यंजन मेवों से सजा कर कपड़े से ढकती है। गौहर मिरज़ा आता है।)
गौहर मिरज़ाः उमराव, सुनो, तुम्हें ख़ानम बुला रही हैं।
उमरावः क्यों? ख़ैर तो है?
गौहर मिरज़ाः ये (यह) तो तुम उन्हीं से पूछो।
(उमराव भागते हुए जाती है। गौहर मिरज़ा उमराव का बनाया ज़रदा खाने लगता है।)
उमरावः ख़ानम साहब, आपने मुझे बुलाया?
ख़ानमः नहीं तो! किसने कहा?
उमरावः गौहर मिरज़ा ने।
ख़ानमः गौहर मिरज़ा ने?
उमरावः जी।
ख़ानमः उसकी तो शकल भी मैंने दो दिन से नहीं देखी।
उमरावः हँ!
ख़ानमः अफ़्शाँ[12] लाने के लिए दो रुपये दिए थे। मुआ डोमनी का जना खा गया होगा हमेशा की तरह। बेटा, भेजना तो उस मुरदार को मेरे पास।
(उमराव दूसरे कमरे में जाती है जहाँ गौहर मिरज़ा ज़रदा ख़त्म कर चुका है।)
उमरावः अल्लाह, अरे अरे गौहर मिरज़ा, यह तो नज़र का ज़रदा है।
गौहर मिरज़ाः भई वल्लाह। उमराव तुम तो ख़ाला हुसैनी से भी ज़्यादा अच्छा ज़रदा बनाती हो।
उमरावः ओफ़ हो।
गौहर मिरज़ाः थोड़ा मीठा कम था उसमें।
उमरावः बेशर्म, बेग़ैरत, चोरी करके खाते हो? मैंने तो दरगाह भेजने को बनाया था।
मिरज़ाः अरे तो रो क्यों रही हो? दरगाह में भी तो कोई खाता ही आख़िर।
उमरावः अल्लाह करे तुम्हें हैज़ा हो जाए। अभी मर जाओ। अभी मर जाओ, तुम...
(गौहर मिरज़ा को दोनों हाथों से मारने लगती है।)
मिरज़ाः अरे उमराव बात तो सुनो! बात तो सुनो तुम! ख़ानम साहब, ख़ानम साहब, मेरी बात तो सुनो।
(उमराव रोते हुए बर्तन उठाती है।)

---

[9]feelings, moods.
[10]disclosure, display, declaration.
[11]improvement.
[12]glitter applied by a Muslim bride to hair and clothes

****

(बिस्मिल्ला, बहार व मलका नामक एक और लड़की गहने पहनते हुए आइने में अपना रूप देख कर ख़ुश हो रही हैं।)

बहारः मलका, जल गईं तुम?

मलकाः जलें मेरे दुश्मन।

****

(ख़ानम और कई महिलाएँ गहने देखते हुए जौहरी से बातचीत कर रही हैं। ख़ानम जौहरी से कोई और गहना दिखाने को कहती हैं।)

ख़ानमः अरे बी, ज़रा बजाओ। बच्चो, गाओ।

जौहरीः ये नये नमूने के हैं।

ख़ानमः अच्छा, वह ज़रा चन्दरा दिखाइए।

जौहरीः ख़ूबसूरत है न?

ख़ानमः इसके साथ पटरी कहाँ है?

जौहरीः माफ़ कीजिए ख़ानम साहिबा, वह कारीग़र ने तैयार नहीं की।

ख़ानमः आज ही भिजवा दीजिए। परसों तो मिस्सी[13] है।

जौहरीः अच्छी बात है।

ख़ानमः ए हुसैनी!

हुसैनीः जी।

ख़ानमः वह बनत कहाँ है जो दिल्ली से आई थी?

हुसैनीः ख़ानम साहब, मैंने अंदर संदूकची में रखी है।

ख़ानमः ओफ़ हो, मौलवी साहब की टोपी में टाँकने के लिए रखी है क्या? लेकर आओ जल्दी से।

(सब हँसने लगते हैं।)

जौहरीः ख़ानम साहब, आपकी बातें बड़ी दिलचस्प होती हैं। यह लीजिए। यह कंगन मैंने बनायी है।

****

हुसैनीः दौड़ा-दौड़ा कर पाँव तोड़ डाले। हुसैनी यह करो, हुसैनी वह करो। इतना बड़ा जलसा, और एक अकेली हुसैनी। *(मौलवी साहब से)* आप यहाँ क्या कर रहे हैं?

मौलवीः आप तो हमें भूल ही गयीं। भूख बहुत लगी थी। सोचा, अकेले ही खा लो।

हुसैनीः ज़रा-सा इंतज़ार नहीं कर सकते थे? हाँ, क्यों करो, मैं कोई निकाही बीबी थोड़े ही हूँ।

मौलवीः हँ, हँ, अब तो ज़रा-ज़रा सी बात पर रूठना छोड़ दो। लो, खा लो।

हुसैनीः नहीं खाते।

---

[13] initiation ceremony whereby a virgin prostitute is 'engaged' to a rich man. Literally, a powder used by women for tinging the teeth to beautify themselves.

मौलवीः ओए, तुम्हें हमारी जान की क़सम, मेरी हुस्ना, लो, खा लो। *(खिलाते हैं और हुसैनी ख़ुश होकर खाती है।)*

हुसैनीः मनाना तो कोई आपसे सीखे।

****

(उमराव उन दोनों को पर्दे के पीछे से चुपचाप देख रही है। अचानक मिरज़ा आकर उसके हाथ से एक काग़ज़ का टुकड़ा छीनकर पढ़ने लगता है।)

मिरज़ाः दिल ही नहीं हुज़ूर, मेरी जान ...

उमरावः *(मिरज़ा से कागज़ छीनती है)* चल हट!

मिरज़ाः शुश।

हुसैनीः हाय हटो, कोई है! *(चली जाती है।)*

****

(उमराव कमरे में आती है। मौलवी साहब कटोरा उठा कर कुछ पी रहे हैं।)

उमरावः मौलवी साहब।

मौलवीः हाँ, एक और ग़ज़ल कह ली? भई माशा अल्लाह, क्या रफ़्तार है! सुनाओ।

उमरावः "दिल ही नहीं हुज़ूर, मेरी जान लीजिए।
बस एक बार मेरा कहा मान लीजिए॥"

मिरज़ाः वाह!

मौलवीः हम्म्म। मतला बुरा नहीं है। लेकिन दो बातों का ध्यान रखा करो।

उमरावः जी।

मौलवीः एक तो ख़्याल की नज़ाकत, और दूसरे अलफ़ाज़ की बंदिश। मीर[14] का एक शेर है

"नाज़ुकी उसके लब की क्या कहिए।

हूँ?

"नाज़ुकी उसके लब की क्या कहिए।
पंखड़ी एक गुलाब की-सी है।"

मिरज़ाः वाह!

उमरावः वाह!

मिरज़ाः वाह! लेकिन मौलवी साहब, आप तो उस्तादों की बात कर रहे हैं। इन्होंने तो अभी शुरू की है शायरी।

उमरावः मतले की इसलाह कीजिए न, मौलवी साहब।

मौलवीः अच्छा, हम्मम। तुमने कहा है, "दिल ही नहीं हुज़ूर, मेरी जान लीजिए ... दिल ही नहीं हुज़ूर ...।" इससे बेहतर यूँ कहो न,

"दिल चीज़ क्या है, आप मेरी जान लीजिए।

हैं?

"दिल चीज़ क्या है, आप मेरी जान लीजिए।
बस एक बार मेरा कहा मान लीजिए॥"

****

---

[14]famous Urdu poet (1722-1810).

(उमराव महफ़िल में नाचती है। गाने के बीच में बड़े नवाब अंदर आकर महफ़िल में बैठते हैं और उनके बेटे सुलतान कोठे के बाहर बग्घी में बैठकर ग़ज़ल का आनंद लेते हैं। गौहर मिरज़ा नवाब सुलतान को गाना सुनते देखता है।)

गज़ल

आऽऽऽऽ दिल चीज़ क्या है, आप मेरी जान लीजिए।
बस एक बार मेरा कहा
बस एक बार मेरा कहा मान लीजिए॥
इस अंजुमन[15] में आपको
इस अंजुमन में आपको आना है बार-बार
दीवार-ओ-दर को ग़ौर से पहचान लीजिए।
माना कि दोस्तों को नहीं दोस्ती का पास[16]।
लेकिन यह क्या कि ग़ैर का एहसान लीजिए।
कहिए तो आसमाँ को ज़मीं पर उतार लाएँ।
मुश्किल नहीं है कुछ भी अगर ठान लीजिए।
दिल चीज़ क्या है, आप मेरी जान लीजिए।
बस एक बार मेरा कहा मान लीजिए॥

(नवाब सुलतान बग्घी वाले को चलने का इशारा करते हैं।)

नवाब सुलतानः चलो।

****

(नवाब छब्बन बिस्मिल्ला को माला पहनाते हैं।)

नवाब छब्बनः यह लीजिए।

बिस्मिल्लाः पहनाइए न। *(माला पहनवाने के लिए पीठ फेरती है।)*

नवाब छब्बनः पसंद आया न?

बिस्मिल्लाः हम्म्म। बहुत। *(नवाब छब्बन बिस्मिल्ला का आलिंगन करते हैं।)*

****

(दूसरे कमरे में उमराव आइने में अपने को निहार रही है। मिरज़ा उसके लिए चुटीला लेकर आता है।)

मिरज़ाः आइने के पास तो कुछ भी नहीं
मेरी आँखों में तेरी तस्वीर है।

उमरावः हमारे लिए है?

मिरज़ाः हूँ। ज़रा गूँथ के (कर) तो दिखाओ।

उमरावः आप ही गूँथ दीजिए न।

(मिरज़ा चुटीला गूँथने के लिए उसके सिर से धीरे-धीरे दुपट्टा हटाता है। फिर चुटीला गूँथने के बदले उसका आलिंगन करता है। बीच में ही मौलवी साहब आकर हल्ला करते हैं।)

****

---

[15]assembly, society.

[16]consideration.

ख़ानमः हरामज़ादे, जवानी का जोश दिखाने के लिए मेरी ही नौचिया[17] रह गयी थी? मैंने तुझे ख़ाक से पाक कर दिया। *(गौहर मिरज़ा को मारती है।)* ख़ुदा क़सम। मैंने तुझे क्या नहीं दिया? फोकट का रहने को दी, पहनने को कपड़े दिये, पैसा दिया और...

मिरज़ाः जान की क़सम ख़ानम साहब, मैंने कभी किसी को आँख उठाकर नहीं देखा। वो (वह) उमराव ने तो ख़ुद मुझे बुलाया।

ख़ानमः मुझे चलाने आया, कमीने! निकल जा यहाँ से। मैं तेरा मुँह तक देखना नहीं चाहती। अगर चौक में दोबारा क़दम रखा तो टाँगे तुड़वा दूँगी। निकल यहाँ से। दफ़ा हो यहाँ से।

मिरज़ाः जी, जी, जा रहा हूँ।

(मिरज़ा बाहर को भागता है और बड़े नवाब आते हैं।)

मिरज़ाः आदाब।

बड़े नवाबः आदाब, मियाँ ख़ैरियत तो है?

मिरज़ाः जी...ख़ुदा का शुक्र है।

बड़े नवाबः *(ख़ानम से)* आदाब अर्ज़ है।

ख़ानमः आइए, आइए नवाब साहब, तशरीफ़ लाइए।

बड़े नवाबः जी।

ख़ानमः आइए, बैठिए।

बड़े नवाबः शुक्रिया। बिस्मिल्ला जान कहीं बाहर गयी हुई हैं?

ख़ानमः चाहने वाला हो तो आप जैसा। अभी तक बिस्मिल्ला की रट लगी है। गिलौरी लीजिए। *(पान देती है।)*

बड़े नवाबः आदाब। आप तो जानती हैं ख़ानम साहब, "दिल के आने के ढंग निराले हैं...

ख़ानमः ओए, ओए, मलका या बहार पसंद नहीं आईं आपको?

बड़े नवाबः अब क्या अर्ज़ करूँ...

ख़ानमः उमराव के बारे में क्या ख़्याल है आपका?

बड़े नवाबः जी? वल्लाह आप यह क्या कह रही हैं?

ख़ानमः आप कहें तो कल ही आपकी नौकरी में दे दूँ।

बड़े नवाबः तो फिर हम इस बात को पक्की समझें?

ख़ानमः बिलकुल। बस रस्म के लिए कुछ बन्दोबस्त कर दीजिए। कम से कम पाँच तोड़े तो लगेंगे....

बड़े नवाबः पाँच तोड़े?

ख़ानमः *(सरौते को घुमाते हुए)* हुज़ूर की इज़्ज़त का सवाल है नवाब साहब।

बड़े नवाबः फिर इसके लिए तो हमें गाँव जाना पड़ेगा।

ख़ानमः सोच लीजिए सरकार। और भी कई जगह से बात आई है।

बड़े नवाबः तो फिर हम आज ही चले जाते हैं।

****

---

[17]diminutive of नौची, a professional dancing girl, a nautch.

(नवाब सुलतान कुछ लोगों के साथ बैठे हैं। वे एक ग़ज़ल पढते हैं)
नवाब सुलतानः किस-किस तरह से मुझको न रुसवा[18] किया गया।
एक आदमीः *(दुहराता है)* "किस-किस तरह से मुझको न रुसवा किया गया...."।
किस-किस तरह से मुझको न रुसवा किया गया।
ग़ैरों का नाम मेरे लहू से लिखा गया।
सबः वाह, वाह, सुबहान अल्लाह, क्या खूब, माशा अल्लाह।
(गौहर मिरज़ा आता है।)
मिरज़ाः तसलीम है। तसलीम है।
(वही आदमी फिर दुहराता है, किस-किस तरह से मुझको न रुसवा किया गया....")
मिरज़ाः तसलीम है। तसलीम है। बिस्मिल्लाह।
नवाब सुलतानः इरशाद जनाब।
मिरज़ाः जी, तो ...अर्ज़ किया है
"दिल चीज़ क्या है, आप मेरी जान लीजिए।
बस एक बार मेरा कहा मान लीजिए॥"
सबः वाह, वाह, माशा अल्लाह। वाह, वाह। क्या खूब!
मिरज़ाः इस अंजुमन में आपको आना है बार-बार
दीवार ओ दर को ग़ौर से पहचान लीजिए।
सबः वाह, वाह।
नवाब सुलतानः *(यह याद करते हुए कि जब उमराव यह ग़ज़ल गा रही थी तो वे कोठे के बाहर बग्घी में बैठकर सुन रहे थे)* जनाब, यह ग़ज़ल... आपकी तो नहीं मालूम होती।
मिरज़ाः हुज़ूर, जान की अमान[19] पाऊँ तो कुछ अर्ज़ करूँ।
छोटे नवाबः कहिए।
मिरज़ाः यह ग़ज़ल मेरी नहीं है। उमराव जान 'अदा' की है।
छोटे नवाबः उमराव जान?
मिरज़ाः जी।
छोटे नवाबः हमने तो यह नाम पहले कभी नहीं सुना।
मिरज़ाः हुज़ूर, उमराव जान की तारीफ़ करना तो सूरज को चिराग दिखाना है। ऐसी हसीन कि परिस्तान की परी ज़हर खा ले। शायरा ऐसी कि उस्ताद कान पकड़ें। और आवाज़! ओह! शोला सा लपक जाए है। आवाज़ तो देखो!
****
(ख़ानम बैठी हैं। मिरज़ा आता है। पीछे से नवाब सुलतान हैं।)
मिरज़ाः ख़ानम साहब, आदाब। ख़ानम साहब।
ख़ानमः क्या? नवाब सुल्तान?
मिरज़ाः हुज़ूर!
ख़ानमः तसलीम! तसलीम!

---

[18]dishonoured, disgraced (by being in love).
[19]assurance of safety, mercy.

आदाब, तसलीम!
आदमीः आइए, आइए मियाँ। यहाँ आने के आप ही के दिन हैं। तशरीफ़ रखिए।
मिरज़ाः हुज़ूर, यही हैं।

गाना

इन आँखों की मस्ती के आऽऽऽ
मस्ताने हज़ारों हैं।
इन आँखों से वाबस्ता[20] अफ़साने हज़ारों हैं।
इक तुम ही नहीं तनहा आऽऽऽ उलफ़त में मेरी रुसवा।
इस शहर में तुम जैसे दीवाने हज़ारों हैं।
इक सिर्फ़ हमीं मय को आँखों से पिलाते हैं
कहने को तो दुनिया में मयख़ाने हज़ारों हैं।
इस शम्मे फ़रोज़ाँ[21] को आऽऽऽ आँधी से डराते हो।
इस शम्मे फ़रोज़ाँ के परवाने हज़ारों हैं।

सबः माशा अल्लाह, वाह, वाह, ...लखनऊ में आपका.... एक-एक शेर मोतियों में तौलने के लायक़ है।
(नवाब सुलतान अपनी मोतियों की माला उतार कर उमराव को देते हैं। वह आदाब करते हुए स्वीकारती है।)
****
(उमराव चौसर खेलते हुए कौड़ियों का पाँसा फेंक रही है।)
लड़कीः पच्चीस
दूसरी लड़कीः बिस्मिल्ला की शकल तो देखो ज़रा।
लड़कीः फिर पच्चीस।
तीसरी लड़कीः अरे फिर!
दूसरी लड़कीः बिस्मिल्ला, अब मज़ा आयेगा।
उमरावः ख़ुदा करे, तीन आए।
लड़कीः अरे तीन!
दूसरी लड़कीः कमाल है!
बिस्मिल्लाः पिट रे। जाओ, हम नहीं खेलतीं।
लड़कियाँः हारी तो भागी...
मिरज़ाः अरे क्या तेवर हैं। बिछाओ, बिछाओ। हम भी खेलेंगे।
(लड़कियाँ हँसती हुई "चलो, चलो" कहती चली जाती हैं।)
मिरज़ाः बिछाओ।
उमरावः ख़ानम ने तुम्हें माफ़ कर दिया?
मिरज़ाः अरे ख़ानम हमें न माफ़ करतीं तो और क्या करतीं? मैं ही तो उनके बुढ़ापे का सहारा हूँ। ख़फ़ा हो मुझसे?

---

[20] attached.
[21] शमा-ए-फ़रोज़ाँ = beacon, a lamp that spreads light, an illuminated candle.

उमरावः नहीं।
मिरज़ाः तो ... हाथ फैलाओ।
उमरावः क्यों?
मिरज़ाः खरे सोने की पाँच अशर्फ़ियाँ।
उमरावः क्या, मुजरे का बयाना है?
मिरज़ाः नवाब सुलतान ने दस दी थीं। पाँच मैंने रख लीं।
उमरावः नवाब सुलतान? कौन नवाब सुलतान?
मिरज़ाः वही जिन्होंने कल सुबह तुम्हें यह सतलड़े का हार दिया है। उनके घर तुम्हारे मुलाज़मत[22] की बात भी चल रही है। उन्होंने तुम्हारी ग़ज़ल भी मँगवाई है, जो कल गाई थी।
उमरावः जब वे यहाँ आयेंगे, तो उन्हें दे दूँगी।
मिरज़ाः हम्म्म। ठीक है। उन्हीं को दे देना। वैसे अगर मेरे हाथ भिजवातीं तो मुझे कुछ अशर्फ़ियाँ और मिल जातीं। अच्छा इन्हें तो छुपा लो।
उमरावः क्यों? ये तो ख़ानम को देनी होंगी।
मिरज़ाः ओफ़ हो! उन्हें बताने की ज़रूरत क्या है? न तुम बताओ, न मैं। अच्छा, ख़ानम साहब से मिल लूँ।
(उमराव गहने पहनकर शीशे में देखती है। बग्घी पर बैठ कर नवाब सुलतान आते हैं।)
****
आदमीः तशरीफ़ लाइए हुज़ूर। आइए हुज़ूर। हुज़ूर!
उमरावः तसलीम।
नवाबः आदाब।
उमरावः तशरीफ़ लाइए।
नवाबः हम कोठों में बहुत कम आते हैं।
उमरावः अब हम ऐसे बुरे भी नहीं हैं, नवाब साहब।
नवाबः आप ही की वजह से तो आए हैं, वरना हरगिज़ न आते।
उमरावः मैं जानती हूँ, हुज़ूर मेरा दिल रखने के लिए ऐसा कह रहे हैं।
नवाबः नहीं उमरावजान, दरअसल उस रात का जादू उतरा ही नहीं। ऐसा मालूम हो रहा था जैसे आप सिर्फ़ हमारे लिए गा रही हों।
उमरावः तो फिर किसके लिए गा रही थी? उस महफ़िल में आप ऐसा शेर-ओ-मौसीक़ी[23] को समझने वाला था भी कौन?
नवाबः बेख़ुदी में हम तो दाद देना भी भूल गए थे।
उमरावः कोई दाद देना भूल जाए, इससे बड़ी दाद क्या होगी?
नवाबः वह ग़ज़ल भी तो आप ही की थी।
उमरावः ए हटाइए। यूँ ही तुकबंदी कर लेती हूँ।

---

[22] service, attendance.
[23] poetry and music.

नवाबः इतने उम्दा कलाम को तुकबंदी कह रही हो। सुबहान अल्लाह। क्या अदा है।
उमरावः हुज़ूर भी तो शेर कहते हैं।
नवाबः शायरी हमारे बस की चीज़ नहीं है। हाँ, तनहाई में गुनगुनाते हुए कोई शेर हो जाए तो यह बात दूसरी है।
उमरावः यहाँ भी तनहाई है। कुछ गुनगुनाइए ना।
नवाबः आपके सामने तो हमारी आवाज़ ही नहीं निकलेगी।
उमरावः अल्लाह! आप सुनाइए भी।
नवाबः अच्छा, एक शर्त पर।
उमरावः मुझे मंज़ूर है।
नवाबः आप अपनी वह ग़ज़ल हमें दे दीजिए।
उमरावः बस, माँगा भी तो क्या माँगा नवाब साहब!
नवाबः उमराव, हम...
उमरावः अब और न तड़पाइए। सुनाइए भी।
नवाबः चंद शेर अर्ज़ हैं।
उमरावः इरशाद?
नवाबः "किस-किस तरह से मुझको न रुसवा किया गया।
ग़ैरों का नाम मेरे लहू से लिखा गया।
क्यों आज उसका ज़िक्र मुझे ख़ुश न कर सका?
क्यों आज उसका ज़िक्र मुझे ख़ुश न कर सका?
क्यों आज उसका नाम मेरा दिल दुखा गया?"
उमरावः वाह, सुबहान अल्लाह!
नवाबः आदाब। *(उमराव उनको एक किताब थमाती है।)* यह क्या है?
उमरावः इन शेरों की क़ीमत एक ग़ज़ल नहीं, मेरी सारी ग़ज़लें हैं।
नवाबः आप हमें शरमिंदा कर रही हैं उमराव जान।
उमरावः लीजिए। शरमिंदा तो मैं और मेरी ग़ज़लें हैं, कि आपके क़ाबिल नहीं।
क्यों आज उसका ज़िक्र मुझे ख़ुश न कर सका।
क्यों आज उसका नाम मेरा दिल दुखा गया॥
वाह, क्या ज़मीन[24] निकाली है।
नवाबः फ़ैज़ाबाद में एक तःरःही[25] मुशायरा हुआ था। वहीं के लिए कही गयी थी।
उमरावः फ़ैज़ाबाद में?
नवाबः जी, फ़ैज़ाबाद में हमारी ननिहाल है।
उमरावः आप फ़ैज़ाबाद के हैं?
नवाबः जी हाँ। आप कभी गई हैं फ़ैज़ाबाद?
उमरावः जाने दीजिए नवाब साहब। अब तो कुछ भी याद नहीं रहा।
नवाबः कुछ भी याद न हो तो आँखें नहीं भीगा करतीं उमराव।

---

24 metre, foundation, background.
25 a specialised poetical gathering.

उमरावः न जाने मुई इन आँखों को क्या हो गया। कभी-कभी शमा की रोशनी भी चुभ जाती है।
नवाबः अगर हम किसी भी क़ाबिल हों तो हर मदद के लिए हाज़िर हैं।
उमरावः ए हे नवाब साहब, आप तो न जाने क्या समझ बैठे। कोई बात भी तो हो। लीजिए, गिलौरी खाइए।
(बड़े नवाब उमराव का अपने बेटे को गिलौरी खिलाना देखते हैं। एक औरत पीछे से खँखारते हुए तसलीम कहती है।)
****
(ख़ानम, बिस्मिल्ला वग़ैरह गहने देख रही हैं।)
ख़ानमः बिस्मिल्ला, देख रही हो तुम?
बड़े नवाबः आदाब।
बिस्मिल्लाः हाय, कितने प्यारे हैं?
सबः आऽऽऽहा।
बड़े नवाबः ख़ानम, यह जो उमराव जान के पास बैठे हैं ... ये साहब...?
ख़ानमः यह तो कोठा है नवाब साहब, यहाँ तो सभी तरह के लोग आते हैं। क्यों?
बड़े नवाबः आप ज़रा यहाँ आइए। *(दोनों दूसरे कमरे में जाते हैं।)* अब आप ही के हाथ में हमारी इज़्ज़त है, ख़ानम। सुलतान को यह पता न चले कि हम यहाँ आते हैं।
ख़ानमः नवाब सुलतान? यह आप क्या कह रहे हैं नवाब साहब? उनसे आपका क्या लेना-देना?
बड़े नवाबः सुलतान हमारा बेटा है, ख़ानम।
ख़ानमः अच्छा?
बड़े नवाबः उसकी माँ से अगरचे अलहदगी हो गई, मगर...
ख़ानमः आप ख़ातिर जमा रखिए[26] नवाब साहब।
बड़े नवाबः हम उमराव के लिए यह लाए थे... *(एक थैली दिखाते हैं।)* अब आप ही रखिए। *(जाते हैं।)*
****
नवाब सुलतानः आपने एक ही महीने में हमें दीवाना कर दिया है, उमराव। देखे बिना चैन ही नहीं आता।
उमरावः अब हम क्या जवाब दें? *(नवाब सुलतान के कंधे पर सिर रखती है।)*
नवाबः क्यों?
उमरावः "अब आप सामने हैं, तो कुछ भी नहीं है याद। वरना कुछ आपसे हमें कहना ज़रूर था।"
नवाबः हमें मालूम है, जो कहना था। *(लेटकर उमराव के माथे पर हाथ फेरते हैं।)* "मैं हूँ तेरा विसाल[27], और गोशा[28]-ए-तनहाई है....

---

[26]खातिर जमा रखना = to be composed.
[27]union, death.
[28]corner.

उमरावः सुनिए, हमने आपके लिए एक ग़ज़ल की धुन बिठाई है।
नवाबः अभी नहीं।
उमरावः ओफ़ हो, सुनिए भी।
नवाबः सुन ही तो रहे।

"ज़ुल्फ़ें जैसे घटाएँ, आँखें जैसे हिरन,
होंठ जैसे गुलाब की पंखड़ी, गर्दन जैसे सुराही।"

यह आपकी ग़ज़ल ही तो है।
उमरावः जाइए, हम आपसे बात नहीं करते। हम इसे बेतुकी ग़ज़ल कहते हैं।
नवाबः अच्छा भाई, ख़फ़ा मत हो। हम सुन लेते हैं। सुनाओ।
(उमराव गाने लगती है। अचानक एक आदमी जिसे बुआ हुसैनी ख़ाँ साहब कहकर पुकारती हैं, कमरे के अंदर घुसकर ज़मीन पर बैठ जाता है।)
ख़ाँ साहबः गाओ, गाओ। रुक क्यों गयीं? हम कोई ग़ैर थोड़े ही हैं।
उमरावः कौन हैं आप?
ख़ाँ साहबः गाना सुनने आये हैं।
उमरावः बुआ।
ख़ाँ साहबः गाओ न।
हुसैनीः क्या हुआ उमराव साहब? ख़ाँ साहब, ज़रा इधर तशरीफ़ लाइएगा।
ख़ाँ साहबः क्यों?
हुसैनीः कुछ अर्ज़ करना है।
ख़ाँ साहबः जो कुछ कहना है, वहीं से कहो। हम जहाँ बैठ जाते हैं, वहाँ से उठते नहीं।
हुसैनीः उई! तो क्या ज़बरदस्ती है?
ख़ाँ साहबः ज़बरदस्ती की क्या बात है? रंडी का कोठा सबके लिए होता है, किसी हराम के जने का ठेका नहीं।
हुसैनीः ठेका क्यों नहीं, जो गाँठ से माल निकालेगा, रंडी उसी की है।
ख़ाँ साहबः तो क्या हम माल ख़र्च करने को पीछे हैं?
हुसैनीः आप किसी...और वक़्त तशरीफ़ लाइए।
ख़ाँ साहबः औरत! वाही[29] हुई है? मैंने कह दिया न, कि मैं यहाँ से नहीं हटूँगा।
हुसैनीः बेटी, तू ही उठ कर चली आ।
(उमराव जाने के लिए उठती है, लेकिन वह आदमी उसको ज़बरदस्ती बैठाकर हँसता है।)
नवाबः उनका हाथ छोड़ दीजिएगा ख़ाँ साहब।
ख़ाँ साहबः देखिए तो कौन भड़ुआ हाथ छुड़ाने की जुर्रत कर सकता है?
नवाबः ज़बान सँभाल कर बात कीजिए। शायद आपने शरीफ़ों की सोहबत नहीं उठाई।
ख़ाँ साहबः *(हँसते हुए)* तुमने तो बहुत शरीफ़ों की सोहबत उठाई है न? जो कुछ करना है, कर लो।

---

[29]crazy.

नवाबः जनाबे अली की क़सम। वालिदैन की इज़्ज़त का ख़्याल है, वरना मज़ा चखा देता मैं।
आदमीः रंडी के कोठे पर आते हो, और अम्मीजान से डरते हो?
नवाबः बुआ मक्का को बुलाइए!
आदमीः ख़िदमतगा़रों के भरोसे न रहना। यह तलवार देखी है आपने...
नवाबः यह अखाड़ा नहीं है ख़ाँ साहब। अगर मुकाबले का शौक़ हो तो बाहर आइए। हो जाएँ दो-दो हाथ।
ख़ाँ साहबः मियाँ साहबज़ादे। अभी तो तुम खुद चूमने लायक़ हो। मरदों से लड़ोगे तो चरका खा जाओगे। और बेचारी अम्मीजान ... रोती फिरेंगी।
नवाबः ज़लील! मरदूद!
(नवाब पिस्तौल उठाकर ख़ाँ साहब पर चलाते हैं। उमराव चीखती है।)
हुसैनीः ख़ानम साहब!
ख़ानमः क्या हुआ? अरे! यह क्या? हुज़ूर घर चले जाइए। मैं समझ लूँगी।
नवाबः हम नहीं जाएँगे।
ख़ानमः आप चले जाइए, नवाब साहब। ख़्वामख़्वाह बदनामी होगी।
मौलवीः आप चले जाइए, वरना खून के मुक़दमे में फँस जाएँगे।
नवाबः कह दिया न। हम नहीं जाएँगे।
आदमीः आ - आह।
ख़ानमः यह तो अभी ज़िन्दा है।
हुसैनीः ऐसे हरामज़ादे कहीं मरते हैं?
उमरावः खुदा के वास्ते आप यहाँ से चले जाइए। आपको मेरे सर की क़सम।
आदमीः या अल्लाह।
(नवाब उमराव के कहने पर चले जाते हैं।)
ख़ानमः इस मरदूद को उठाकर गली में फेंक दो। बाद में देखा जाएगा। चलो।
****

(उमराव पलंग पर लेटी है, हुसैनी उसका सिर दबा रही है।)
मिरज़ाः वाह, "वो (वह) जो बैठे सोग में ज़ुल्फ़े-रसा खोले हुए।
हसरतें मेरी शरीके-बज़्मे-मातम[30] हो गईं॥"
हुसैनीः ए हट मुए। लौंडिया को मत सता। कल रात से पिंडा गरम है।
मिरज़ाः अरे ख़ाला, कोई पिंडा-विंडा गरम नहीं है। नवाब सुलतान का ग़म है। और वे बेचारे अपनी अम्मा की गोद में सर छुपाए बैठे हैं।
हुसैनीः अए और क्या? इस ज़माने में भी कोई सच्चा इश्क़ करता है?
मिरज़ाः हम्म्म।
हुसैनीः खुदा झूठ न बुलाए। हमारे ज़माने में आशिक़ हुआ करते थे। या तो किसी के हो गए, या किसी को अपना कर लिया। वह अपने मौलवी साहब को ही

---

[30]participating in a gathering of mourning.